

श्री आत्म-कमल-जैनलायब्रेरी-ग्रन्थांक (३)

श्रीमद्मुनिचन्द्रसूरिविरचिता-

अंगुलसत्तरी।

अनुयोगाचार्यश्रीदानविजयगणिशिष्य मुनिश्रीशंकरविजयजीना सदुपदेशथी भरुचवाला शा. चुनीलाल मोहनलालनी पत्नी स्वर्गवासी बाई नेमकोरना स्मरणार्थे आवेल द्रव्यसाहायथी

प्रसिद्ध कर्ता-

श्री महावीर जैनसभाना सेक्रेटरी अंबालाल जेठालाल शाह.-खंभात.

अमदावाद-घीकांटावाडीमां आवेला श्रीजैनएडवोकेट प्री. प्रेसमां शा. चीमनलाल गोकलदासे छापी.

श्रीवीरसं. २४४४. वि० सं० १९७४. सने १९१८.

आवृत्ति १ ली. किम्मत बे आना. प्रत ४८०.

नोट-अभ्यासि मुनिमहाराजोने । साध्वीजीने भेट.

॥ अर्हम् ॥

श्रीमद्मुनिचन्द्रसूरिविरचिता-

अंगुलसत्तरी ।

उसभसमगमणमुसभजिणमणिमिससामिसंथुअगुणोहं । नमिऊणंगुललक्खणं संक्खेवमिणं पवक्खामि ॥१॥

अर्थ—ऋषम जिनने नत्वा नमिने आगे कहेवाना अंगुलोनुं लक्षण संक्षेपथी कहीश, ऋ० केवा छे ऋ०-वृषभ समान गमन छे जेहनुं, वली केवा छे अनिमिष एटले देवना तेहना स्वामि इंद्र तेहने स्तुति करवा लायक गुणो छे जेहना. ॥ १ ॥ ते आदिदेवने नमस्कार करी ग्रंथकार अंगुलोनुं लक्षण बतावे छे—

उस्सेहंगुलमायंगुलं च तइयं पमाणनामं च । इय तिन्नि अंगुलाइं वावारिज्जंति समयम्मि॥ २ ॥

अर्थ-उत्सेधांगुल, आत्मांगुल, प्रमाणांगुल आ त्रण प्रकारना अंगुलो सूत्रसिद्धांतमां वर्णवेलाछे.२। ग्रंथकार प्रथम उत्सेधांगुलनु स्वरूप बतावे छे.

परमाणूइच्चाइक्कमेण उस्सेहअंगुलं भणियं । जं पुण मायंगुलमेरिसेणं तं भासियं विहिणा ॥ ३ ॥

" परमाणू तसरेणू रहरेणू वालअग्गलिक्खा य । जूय जवो अट्ठगुणो कमेण उस्सेहअंगुलयं ॥"

अर्थ—जेना छेदनभेदन करवाथी बे टुकडा न थाय ते परमाणु कहीए, अनंता व्यवहारपरमाणु पुद्गलोनो समुह थाय त्यारे एक उत्श्लक्षण-श्लक्ष्णिका, आठ उत्श्लक्षणश्लक्ष्णिकाए एक श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका, आठ श्लक्ष्णश्लक्ष्णिकाए एक उर्ध्वरेणू, आठ उर्ध्वरेणू

एक रथरेणू, आठ रथरेणूए देवकुरु उत्तरकुरु मनुष्यनो एक वालाग्र, आठ देवकुरुउत्तरकुरुमनुष्यना वालाग्रे हरिवास रम्यकवासमनुष्य एक वालाग्र, आठ हरिवासरम्यकुवासक्षेत्रना मनुष्यना वालाग्रे हेमवंतएरण्यवंत जुगलीयानो एक वालाग्र, आठ हेमवंतऐरण्यवंत म-ष्यना वालाग्रे पूर्वमहाविदेह पश्चिममहाविदेह मनुष्यनो एक वालाग्र थाय, आठ पूर्वविदेह पश्चिमविदेहना मनुष्यना वालाग्रे भरत ऐरवत क्षेत्रना मनुष्यनो एक वालाग्र थाय, आठ भरत एरवत मनुष्यना वालाग्रे एक लिख थाय, आठ लिखनी एक जू, आठ जूए एक यवमध्य, आठ यवे एक उत्सेधांगुल थाय । ३ ॥ हवे आत्मांगुलनु स्वरूप ग्रंथकार बतावे छे–

जे जम्मि जुगे पुरिसा अट्ठसयांगुलसमूच्छिया हुन्ति। तेसिं जं नियमंगुलमायंगुलमित्थ तं होइ ॥४॥
जे पुण एय पमाणं ऊणा अहिया व तेसिं मेयं तु । आयंगुलं न भण्णइ किंतु तदाभासमेवत्ति ॥५॥

अर्थ–जे युगने विषे पुरुष एकसोआठ अंगुल उंचो होय तेनो जे अंगुल ते आत्मांगुल कहेवाय (भरतचक्रवर्त्ती विगेरेनो) ।४॥ जे पुनः वली ए प्रमाण १०८ अंगुलरूप थकी उना अथवा अधिका होय तेहने आत्मांगुल न कहीये. किंतु आत्मांगुलाभास कहीए एटले आत्मांगुल सरिखुं दीसे छे पण आत्मांगुल नहि. ॥ ५ ॥ हवे प्रमाणांगुल वखाणे छे.

जं भरहस्सायंगुलमेयं तु पमाणअंगुलं होइ । उस्सेहंगुलचउसयमाणा सूई इहं भणिया ॥ ६ ॥

अर्थ–भरतचक्रीनुं आत्मांगुल ते प्रमाण अंगुल थाय. चारसो उत्सेधांगुले एक सूची प्रमाणांगुल होय. इह प्रमाणअंगुलने विषे सूची कही ते लांबपणे चारसो उत्सेधांगुल जेटलुं लांबपणुं थाय तेटलु प्रमाणअंगुलनुं लांबपणुं थाय. ए प्रमाणअंगुलनी लंबाइ कही. ॥ ६ ॥ हवे प्रमाणांगुलनुं जाडपणुं तथा पहोलाइ कहे छे.

एगंगुलबाहुल्लं अड्ढाइयमंगुलाइं तं पिहुलं । एवं च खित्तगणिए उस्सेहंगुलसहस्सं तं ॥ ७ ॥

अर्थ—ते प्रमाणांगुल एक अंगुल जाडुं होय अढी उत्सेधांगुल पहोळुं होय. हवे लांबु तथा पहोळुं थइ प्रमाणांगुलने विषे उत्सेधांगुल केटला थाय ? ते कहे छे एवं आ प्रकारे क्षेत्रगणित कहेतां लांबपण तथा पहोळपण एकठुं करतां एक प्रमाणांगुले सहस्र उत्सेधांगुल होय ॥ ७ ॥ एक प्रमाणांगुले महस्र (१०००) उत्सेधांगुल केम थाय ? ते बतावे छे.

जम्हा चत्तारि सया अड्ढाइय संगुणा हवइ महसो। अस्सुवओगो तिविहो जहक्कमेणं इमो होइ ॥८॥

अर्थ—चारसोने अढीगुणा करीये तो सहस्र थाय जेहनुं कारण एक प्रमाणांगुल चारसो उत्सेधांगुल लांबु छे. अने अढी अंगुल पहोळुं छे. चार अढीउं दस एतला माटे एक प्रमाणांगुले लंबाइ तथा पहोळाइ थइ सहस्र उत्सेधांगुल थाय. ए प्रमाणअंगुलनो उपयोग त्रण प्रकारे यथाक्रमे आ प्रमाणे छे. ॥ ८ ॥

उस्सेहंगुलमेगं हवइ पमाणंगुलं सहस्सगुणं । एयस्स खित्तगुणियं पडुच्च परिभासियं एयं ॥ ९ ॥

अर्थ—एक प्रमाणांगुले उत्सेधांगुल सहस्र थाय. ए प्रमाणांगुलने क्षेत्रगुणित प्रतीत्य आश्रीने कह्युं. ॥ ९ ॥ ए प्रमाणांगुलनुं प्रथम उपयोगपणुं कह्युं. हवे प्रमाणअंगुलनुं त्रण गाथाथी बीजुं उपयोगपणुं कहे छे.

सुत्तम्मि जत्थ भणिओ उसभसुओ भरहनामगो चक्की। आयंगुलेण वीसा समहिय अंगुलसयपमाणो ॥१०॥

अर्थ—जिहां सूत्रने विषे श्री ऋषभ स्वामीना पुत्र भरतचक्रीना आत्मांगुलनुं अंगुल १२० प्रमाण कह्युं छे. ॥ १० ॥

सो सूइअंगुलेणं चउसयमाणेण होइ घित्तव्वो । कहमन्नह पंचसया उस्सेहंगुलधणूणं सो ॥११॥

अर्थ—स ते भरत सूची प्रमाणांगुल लेवुं. ते केवुं छे. सूची प्रमाणांगुल चारसें गुणुं कीधु छे. अन्यथा एह जो सूची प्रमाणांगुल न मा[illegible] अने चोथी गाथामां आत्मांगुल कह्युं छे तेने मानीये तो छन्नु उत्सेधांगुले धनुष छे जिहां. एहवां पांचसे धनुष प्रमाण [illegible]

छे जेहनुं एवा भरतचक्री केम बने ॥ ११ ॥ पांचसे धनुष प्रमाण शरीर केम होय ते बतावे छे.–

वीसाहियसय चउसयगुणणे जाया सहस्स अडयाला । छन्नवइभागहारे लब्भंते धणुसया पंच ॥१२॥

अर्थ–एकसोवीस उत्सेधांगुलने चारसो गुणा करिये तो अडतालिससहस्र (४८०००) उत्सेधांगुल थाय. अने तेने छन्नुए भाग करीये त्यारे पांचसो धनुष थाय. एटले पांचसो धनुषनुं भरतचक्रीनुं शरीर थाय ॥१२॥ हवे त्रीजा अंगुलनुं स्वरूप कहे छे.

जे पुढवाइपमाणा तव्विक्खंभेण ते मिणिज्जंति । अणुओगदारचुन्नीवित्तीसु य भणियमेयं ति ॥१३॥

अर्थ–जे पृथिवी आदिकनां प्रमाण ते प्रमाणांगुलनुं जे विष्कंभ अढीउत्सेधांगुलरूप तेणे ते पृथ्यादिक मापवां ए प्रमाणे अनुयोगद्वारनीचूर्णिवृत्तिमां कह्युं छे. ॥१३॥ जे कारणे अनुयोगद्वारनीचूर्णिवृत्तिमां कह्युं छे, ते ग्रंथकार पोते बतावे छे.–

जे अ पमाणंगुलाओ पुढवाइप्पमाणा आणिज्जंति । ते अ पमाणंगुलविक्खंभेण आणेयव्वा ण पुण सूइअंगुलेणं ति ॥ १४ ॥

अर्थ–जे प्रमाणअंगुलथी पृथीवी आदिकनां प्रमाण आणे छे. ते प्रमाणांगुलनुं जे विष्कंभ तेणे आणवां पण सूची प्रमाणअंगुले ते पृथ्वी आदिकनां प्रमाण न आणवां एहवु अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णिवृत्तिमां कह्युं छे ॥ १४ ॥

एयं च खित्त गणिएण केइ एअस्स जं पुण मिणंति। अन्ने उ सूइ अंगुल माणेण न सुत्तभणिअं तं ॥१५॥

अर्थ–केटलाक आचार्य कहे छे एअ–कहेतां ए पृथिव्यादिकनुं प्रमाण एअस्स–कहेतां ए प्रमाणांगुलने क्षेत्र गुणितमानस्युं एभाव एक प्रमाणांगुले सहस्रउत्सेधांगुल एहवुं माने एटले एकमत देखाडी, हवे बीजो मत देखाडे छे. अनेराआचार्य सूची प्रमाणांगुले पृथ्व्यादिकनु प्रमाण मानस्युं. इहां एक सूची अंगुले चारसो उत्सेधांगुल थाय एहवु माने. ग्रन्थकर्त्ता कहे छे के बन्ने आचार्यनुं कथन सूत्रोक्त नथी ॥१५॥

किं च मएसुं दोसु वि मगहंगकलिंगमाइआ सव्वे। पाएणारिअदेसा एगम्मि अ जोयणे हुंति ॥ १६ ॥

अर्थ—किंच कहेतां ग्रंथकर्त्ता बन्ने आचार्यना कथनमां दूषण देछे, जो एहवुं मानवामां आवे के एक प्रमाणांगुले सहस्र उत्सेधांगुल एक सूचीप्रमाणांगुले चारसेउत्सेधांगुल ए प्रकारे पृथिव्यादिकनुं प्रमाणमानीये तो. प्राये मगधदेश, अंगदेश, कलिंगदेश, एवं आदि सर्व आर्यदेशनो एक जोजनमां समावेश थाय ॥ १६ ॥

सहस्समाणे चउरंसजोयणे दीहपिहुलभावेणं । हुंति परुप्परगुणणे लक्खा दस जोअणाण फुडं ॥१७॥

अर्थ—चउरंसजोजन केवुं छे, चउरंसजोजन लांबपणे तथा पहोलपणे थइ सहस्र जोजनमान छे जेहनुं एहवुं जोजन परस्परगुणीये तो दाये दाये सो एटले एकजोजनना दशलक्षयोजन थाय, आ एक आचार्यनो मत ॥१७॥ हवे बीजो मत कहे छे. तेमनो आ हिसाब छे.

[illegible]णम्मि पुणो एगो लक्खो सहस्स तह सट्ठी। एवं एगम्मि वि जोअणम्मि कह ते न मायंति ॥१८॥

अर्थ—एक प्रमाणांगुल योजनने विषे लांबपणे पहोलपणे चारसें गणुमान छे ते मान केटलु थाय ? चारसोने चारसोगुणाकरीये तो एकलाख साठसहस्र (१६००००) थाय एवं ए प्रकारे एक योजनने विषे ते आर्यक्षेत्र केम न माय अर्थात् मायज. ॥१८॥

एयं च पुणमलोगिग जमेगजोयण महीइ ते माया । तह सेसजोयणाणं पावइ विहलत्तणं भरहे ॥१९॥

अर्थ—इदं पुर्वोक्तं पुनःवली अलोकिकं जे एकजोजन पृथिवीमां ते सघलाए आर्यदेशो माया तथा वली भरतक्षेत्रने विषे शेष योजन विफलपणु पामे. ठालांज रहे. ॥ १९ ॥ वली ग्रंथकर्त्ता बन्ने मतोमां दूषण देखाडे छे.

तह बारवई नयरी अहवा उज्झाउरी य जा तासिं। धणयसुरनिम्मियत्तेण किल पमाणं समाणं ति ॥२०॥

अर्थ—तथा द्वारिकानगरी अथवा अयोध्यानगरी, ते नगरीने धनदसुर नीपजाववा पणे ते किल निश्चे प्रमाणे सरखीज थाय. ॥२०

सहसगुणेऽसीलक्खा कोडीओ जोयणाण दस हुंति। चउसयगुणणे कोडीलक्ख बिसत्तरि अस्सी सहसा ॥२१॥

अर्थ–द्वारिका अथवा अयोध्या नवजोजन पहोली छे, बारजोजन लांबी छे, नो बारनवां अठोत्तरसो १०८ योजन थाय तो ते योजन सहस्र २ गुणा कीजे दसकोटीयोजन अने एसीलाखयोजन थाय. चारसो गुणा करतां केटलुं थाय ते कहे छे. एक प्रमाणांगुल योजनने चारसो गुणाकरतां एकलाख साठसहस्र योजन होय. १०८ योजने एकलाखसाठसहस्रगुणा किजे एककोटिबहोत्तेरलाखएसीहजार योजन थाय. ॥ २१ ॥ पूर्वोक्त मान लाववा ग्रंथकार स्वयं स्वीकारे छे. ते निचे प्रमाणे.

एयं च पुण पमाणं पिहुला नव जोयणाणि नयरीओ। बारस दीहा तत्तो दुन्हं अंकाणमन्नुन्नं ॥२२॥

गुणणे अट्ठहियसयं जायंतो एग जोयणगएण। गणियपएणं गुणिए पुव्वुत्तेणं इमंमि भवे ॥२३॥

अर्थ–इदं ए पूर्वोक्तं तु पुनःवली प्रमाणकिम ? यथा द्वारिकानगरी नवयोजन पहोली छे. अने बारजोजन लांबी छे, तो ए बन्ने अंकोने अन्यो अन्य गुणतां १०८ थाय ततः एकयोजनगत गणित प्रमाण छे; जे दसलक्ष योजन अने एकलाखसाठसहस्ररूपने १०८ गुणा कीजे इदं पूर्वोक्तं भवेदिदं ए पूर्वोक्तं १०८००००००० अने १७२८०००० होय ॥ २२ ॥ २३ ॥

एयं च अइपभूयं नगरपमाणं न जुज्जए जम्हा। तम्हा पमाणअंगुल विक्खंभपमाणओ गिज्ज ॥२४॥

अर्थ–ए पूर्वोक्त नगर प्रमाण अतिप्रभूतं अतिघणुं तेह माटे योग्य नहि माटे प्रमाणांगुलनुं जे विष्कंभप्रमाण तेहज ग्राह्यं तेज ग्रहण-करवुं॥ २४ ॥ वली ते बन्ने मतने विषे दोष देखाडे छे.

तह कूणियस्स रन्नो साहियदक्खिणदिसस्स वेअड्ढे। परिमियजीविअकालस्स जुज्जए कह णु गमणं ति ॥२५॥

अर्थ–तथा कोणिक राजा केवो छे साधी छे दक्षिण दिशा जेणे. वली केवो छे परिमित आयुष छे जेहनुं. इति वितर्के एहवाने वैता-

ढ्यने विषे गमन किम युक्त थाय ? केमके भूमि घणी छे अने आयुष थोडुं एटला माटे पृथिवी आदिकनुं प्रमाणअंगुलनुं जे विष्कंभ तेणे ज मापवुं. एक प्रमाणांगुले सहस्रउत्सेधांगुल थाय अथवा एक प्रमाणअंगुले चारसें उत्सेधांगुल थाय. तेवा प्रमाणांगुले पृथिव्यादिकनुं प्रमाण न मापवुं ॥२५॥ वली ए वस्ने मनमां दोष देछे.

गंधारसावयस्स वि वेयड्ढगुहाइं चेइए नमिउं । कह वीभयम्मि चेइयवंदणहेउं गमो हुज्जा ॥२६॥

अर्थ—गंधार नामनो श्रावक वैताढ्यनी गुफाए चैत्यवांदी विनभयपत्तनने विषे चैत्य वांदवाने अर्थे गमन केम होय. शा माटे आउखुं थोडुं अने भूमी घणी एटला माटे ॥२६॥ ग्रंथकारे अढी अंगुले पृथिव्यादिकनुं प्रमाण अंगिकार कीधुं ते वारे परने शंका उपनी ते कहे छे.

जं पुण भणंति भरहाइचक्किणो परिगरो कहंमाई। एवमिणिज्जंने भारहम्मि भन्नइ न सो दोसो ॥२७॥

अर्थ—जे पुनः वली एहवुं कहे छे. भरतादिक चक्रीनुं परिकर भरतक्षेत्रने विषे केम माय, जो पृथिवी आदिक अढी अंगुले मपाय. भण्यते ग्रन्थकार कहे छे. सः ते अढी अंगुले मापतां कांइ दोष आवतो नथी. ॥ २७ ॥ ते भावनाए करी देखाडे छे.

जं भरह खित्तपयरं बासीया छम्सया असीसहसा। तेवन्नं त्रि य लक्खा जोयण माणेण सिद्धमिणं ॥२८॥

अर्थ—जे भरतक्षेत्रनुं प्रतर कहेतां सघलुं थइने त्रेपनलाख ऍंसीहजार छसोने ब्यासी योजन होय ॥२८॥ एटलुं प्रमाण केम थाय ते कहे छे.

दाहिणउत्तरभरहद्धविजयगिरिपयरमीलणे एयं । संपज्जइ जं दीसइ खित्तसमासम्मि इयं वुत्तं ॥२९॥

अर्थ—दक्षिणभरतार्द्ध, उत्तरभरतार्द्धनु प्रतर विजयगिरि कहेतां वैताढ्यनुं तलुं ए मेलवतां ए पूर्वोक्त ५३८०६८२ होय. तेनुं कारण तो क्षेत्र समासने विषे एहवु कह्युं छे. ॥२९॥ ते बतावे छे.

लक्खट्ठारस पणतीससहस्सा चउसया य पणसीआ। बारस कला छविकला दाहिण[illegible]रं तु ॥३०।

अर्थ–अढारलाख पांत्रीसहजार चारसोने पंच्यासी अने कला १२ विकला ६ एटलुं दक्षिणभरतार्द्धनुं प्रतर छे. ॥ ३० ॥

सत्तहिया तिन्निसया बारस य सहस्स पंच लक्खा य। बारस कला उ पयरं वेअड्ढगिरिस्स धरणितले ॥३१॥

अर्थ–पांचलाख बारहजार त्रणसोने सात जोजन अने कला १२ एटलुं वैताढ्यनुं तल छे. ॥ ३१ ॥

अडसीया अट्ठसया बत्तीससहस्स तीसलक्खा य। बारस कला उ अहिया उत्तरभरहद्धपयरं तु ॥३२॥

अर्थ–३०३२८८८ जोजन, १२ कला अने ११ विकला एतेषां मीलने यथोक्तं प्रतर प्रमाणं संपद्यते॥ ५३८०६८१ कला १७ विकला १७ उत्तरभरतार्द्धनुं प्रतर एटलुं छे. दक्षिण भरतार्द्धनुं प्रतर, उत्तर भरतार्द्धनुं प्रतर, वैताढ्यनुं तलु ए त्रणेने मेलवतां भरतक्षेत्रना प्रतरनुं प्रमाण होय. ॥ ३२ ॥

अड्ढाइज्जगुणत्ते आयामो गाउआइं दस होइ। एवं चिय विक्खंभो सव्वेसु वि जोअणेसु इहं ॥ ३३ ॥

अर्थ–एक प्रमाणांगुल योजनने विषे उत्सेधांगुल निष्पन्न लंबाइपणे अढी योजन होय, अने अढी योजनना दश दश गाउ थाय. एवं पहोलपणे दश गाउ होय तो अढी अढी गुणा कीजे तो दाये दाये सो, तो एक प्रमाणांगुल निष्पन्न योजनने विषे उत्सेधांगुल निष्पन्न सो गाउ होय. एवं सर्व प्रमाणांगुले निष्पन्न योजनने विषे उत्सेधांगुल निष्पन्न सो गाउ थाय. ॥ ३३ ॥

विक्खंभायामाणं परुप्परं संगुणम्मि सयमेगं। इह होइ गाउआणं तो भरहे गाउअपमाणं ॥ ३४ ॥

अर्थ–विष्कंभ अने आयाम ए परस्पर गुणीए. इह प्रमाणांगुल निष्पन्न योजनने विषे उत्सेधांगुल निष्पन्न सो गाउ होय, ततो तिवार पछे भरतक्षेत्रने विषे गाउनुं प्रमाण होय. ॥ ३४ ॥ केटला गाउ थाय ते ग्रंथकार पोते बतावे छे.

दुन्निसयं अट्ठसट्ठी सहस्स लक्खा असीइ तह चेव। तेवन्नं कोडीओ इक्किक्के गाउए तत्थ ॥३५॥

अर्थ–५३८०६८२०० एटला गाउ होय. ॥ ३५ ॥ हवे ते भरतक्षेत्रने विषे जे गाउ छे, ते एक एक गाउने विषे केटलां केटलां

गाम छे ते बतावे छे.

दुन्निअ तिन्निअ चउरो गामा दीसंति तीसकोडीसु । छन्नवइ गाम कोडी लेसुद्देसेण मायंति ॥ ३६ ॥

अर्थ–एकेका गाउने विषे ग्राम बे त्रण चार देखीए छीए, एणी रीते त्रीस कोटी गाउने विषे छन्नुकोटी ग्राम माय. ॥ ३६ ॥

त्रीसकोटी गाउने विषे छन्नुकोटी ग्राम केवी रीते माय ते भावना करी देखाडे छे.

अट्ठसु दो दो गामा अट्ठसु पुण तिन्नि तिन्नि कोडीसु । चउरो चउरो चउदस कोडीसु विरोहओ मंति ॥३७॥

अर्थ–एक कोटी गाउने विषे बे कोटी ग्राम माय. एटले आठ कोटी गाउने विषे सोलक्रोड ग्राम माय. वली आठ कोटी गाउने विषे त्रण त्रण कोटी ग्राम होय एटले आठ कोटी गाउने विषे चौवीस कोटी ग्राम माय, वली चौदकोटी गाउने विषे चार चार कोटी ग्राम माय, एटले चौदकोटी गाउने विषे छप्पन्न कोटी ग्राम माय. आ रीतथी त्रीस क्रोड गाउने विषे छन्नुक्रोड ग्राम अविरोधपणे मइ शके. ॥ ३७ ॥

सेसा जा चउवीसं किंचूणाओ तयद्धमित्तंमि। जे पट्टण–पुर–कब्बड–खेडाइ भासिया सुत्ते ॥ ३८ ॥

अर्थ–भरतक्षेत्र ५३८०६८२०० आटलुं छे ते मांहेला त्रीसक्रोड गाउ कह्या. हवे शेष कांइक उंणा चोवीसक्रोड गाउ छे तेहनुं अर्ध कांइक उंणा बारकोटी गाउ थाय. तेहने विषे जेह पत्तन पुर कर्बट, खेट इत्यादि जे सूत्रने विषे कह्यां छे ते सर्व माय. ॥ ३८ ॥

हवे पत्तन पुर इत्यादिक केटलां छे ते कहे छे.

सव्वे वि तिन्नि लक्खा सत्तरससहस्स पंच अहियं च । सयमेगमणुवरोहा संभवओ हुंति मायंता ॥३९॥

अर्थ–सर्व थइ ३१७१०५ त्रणलाख सत्तरहजार एकसोने पांच होय. एहनो अविरोधपणे मावानो संभव होय ॥ ३९ ॥

तह पव्वया वि वेअड्ढमाइणे एअखित्तमज्झंमि । जोइज्जा जं हुंति उवरि पासेसु अ पुराइं ॥ ४० ॥

अर्थ–तथा वली पर्वत वैताढ्यादिक भरतक्षेत्रने विषे छे, ते पर्वत उपर पासे जे पुरादिक ते सर्वत्र छे. ॥ ४० ॥

वग्गागयाण तुरियाईणं जह मज्झिमेण भंगेणं। मुल्लगणणा तह जणो मज्झिममाणेण घित्तव्वो ॥४१॥

अर्थ–यथा जेम वर्गागतानां समुदाये आव्या तुरयाईण घोडादिक तेहनुं मध्यम मूल गणीए उत्कृष्टे अने जघन्ये न गणीए. तथा० तेम जनलोकनुं मध्यममान लेवुं, उत्कृष्ट तो पांचसो धनुष्य प्रमाण, अने जघन्यतो बे हस्तनुं मान लेवुं. ॥ ४१ ॥ मध्यम भागे केटलुं होय ते कहे छे.

पंचन्हसयाणद्धं सयाइं अड्ढाइयाइं इह हुंति । पिहुलत्तं पुण पंचमभागे सयगस्समद्धं च ॥ ४२ ॥

अर्थ–पांचसे धनुष्यनुं अर्ध अढीसो धनुष्य एटलुं उंचपणुं होय. पांचमें धनुष्यनो पांचमो भाग एकसो धनुष्य, तेहनुं अर्ध पचास धनुष्य, एटलुं पहोलपणे होय. ॥ ४२ ॥ ते मध्यममानना मनुष्यनुं प्रतरकरतां केटलुं थाय ते कहे छे.

दुन्हं परुप्परगुणणे अंगाणं हुंति बारस सहस्सा। पंचहिं सएहिं अहिआ एरिसमाणेण ठविअव्वो ॥४३॥

लोगो पुरेसु गामेसु वा वि जं सव्वसंगहो एवं । होइ कओ संकलणा वि होइ पाणीसु एमेव ॥४४॥

अर्थ–पचाश धनुष्य अने अढीसें धनुष्य ए बेहुं आंक परस्पर गुणीए तो बार हजार अने पांचशो होय एहवे माने लोक पुरने विषे गामने विषे स्थापवुं, जेह कारणे, एवं ए प्रकारे सर्व संग्रह होय, पाटीने विषे संकलना कहि ते लेखुं किधुं एमज होय. ॥४३–४४॥

जाओ पुण सेसाओ कोडीओ तासु जाइं एआइं। गंगाइआण सलिलाइं तेसु दीवा य मायंति ॥४५॥

अर्थ–तो पुनः वली जे शेष बार कोटी गाउ छे तेहने विषे जे गंगादिकनां पाणी ते पाणीने विषे जे द्वीप छे तेह माय. ॥ ४५ ॥ शिष्य पृच्छति पुनः निश्चे भूमि थोडी लोकने विषे सुख केम होय ? ते उपर कहे छे.

कालो य चक्किकालो अच्चंतसुहा दुमाइपउरो अ। ता थोवे वि विभागे सुहिया गामादओ हुंति ॥४६॥

अर्थ—काल तो चक्रीकाल जेणे वारे चक्री होय. वली केवुं अत्यंत सुख छे जिहां एवुं. वली केवुं वृक्षादिक प्रचुर एहवा कालने विषे, थोडे ठामे ग्रामादिक सुखी होय. ॥ ४६ ॥ हवे आखी द्वारिका प्रतर करतां केटलां योजन छे, ते कहे छे.

अड्ढाइज्जगुणत्ते नयरीओ जोअणाण छच्च सया। पणसयरीइ समहिआ ते पुण एवं मुणेयव्वा ॥४७॥

अर्थ—एक प्रमाणांगुल योजन उत्सेधांगुल निष्पन्न अढी योजन लांबपणे पहोलपणे होय, अने उत्सेधांगुल निष्पन्न योजनने विषे गाउ दश होय, तो अढी योजनने अढी गुणा कीजे, सवा छ योजन थाय. दाये दाये सो एटले सो गाउ थाय, अने एक उत्सेधांगुल निष्पन्न योजन लांबपणे पहोलपणे चार गाउ होय. एटला माटे चार चोकुं सोल सोल गाउए एक उत्सेधांगुल निष्पन्न योजन, सो गाउना योजन कीजे सोल छक छन्नुं—सोमांहीथी छन्नु गया लाधा योजन छ, सोल गाउए एक योजन. एटला माटे उगरे गाउ चार तो सोलनो चोथो भाग चार एटले छ योजन अने एक गाउ होय, ते छ योजन एक सो आठ गुणा कीजे ६४८ थाय. वली ते छ योजन उपर एक गाउ छे. ते १०८ गुणा कीजे १०८ गाउ होय तो १०८ गाउना २७ योजन थाय, ते २७ योजन ६४८ माही घालीए तो ६७५ योजन होय, द्वारिकानगरी ६७५ योजन छे. ते ६७५ पुनः वली एवं ईणे प्रकारे जाणवा ॥ ४७ ॥ ग्रंथकार ६७५ योजन आणवानो प्रकार कहे छे.

अड्ढाइआण दुन्हवि अंकाणन्नुन्न ताडणे हुंति । छज्जोयणा सकोसा नयरीपयरं गुणे तेहिं ॥ ४८ ॥

अर्थ—अढी योजनने अढीगुणा कीजे तो सो गाउ थाय, ते सो गाउने १६ सोले भाग दीजे, छ योजने एक कोष होय, पछी ते छ योजनने १०८ गुणा कीजे ६४८ योजन होय, पछे १०८ गाउना योजन कीजे, २७ योजन थाय ते २७ योजन ६४८ योजनमांही नाखीए तो ६७५ योजन होय एटले आखी नगरीए योजन होय. ॥ ४८ ॥ हवे आखी नगरीए धनुष्य केटलां होय ते कहे छे.

अट्ठधणूण सहस्सा आयामो वित्थरो य जं होइ । इक्किक्कजोयणे ताडणंमि तो दुन्हमंगाणं ॥ ४९ ॥

छक्कोडीओ चालीसलक्ख धणुहाणमित्थ लब्भंति। तो नयरजोअणगुणे गुणिए धणुहप्पमाणेणं ॥५०॥

अर्थ—एक योजन लांबपणे पहोलपणे आठ हजार धनुष्य होय, एक योजन प्रतरगुणा करतां केटला धनुष्य होय ते कहे छे. बेहु आंक अन्योअन्य गुणीए, ते आ प्रमाणे आठ आठां चोसठ छकोटी चालीस लाख धनुष्य एक योजन प्रतरगुणा करतां होय. हवे आखी नगरीने विषे केटला योजन होय ते कहे छे. नगरीना योजन ६७० छे ते छ कोटी अने चालीसलाख गुणा कीजे आखी नगरीना धनुष्यनुं प्रमाण होय. ॥ ४९–५० ॥ केटलुं थाय ते कहे छे.

सव्वाए नयरीए लद्धं एयं धणुप्पमाणेणं । चउरो कोडिसहस्सा तिन्नि सया वीस कोडीओ ॥ ५१ ॥

अर्थ—आखी नगरीने विषे चार कोटी सहस्र त्रणसो कोटी अने वीस कोटी ४३२००००००० एटला धनुष्य प्रतरगुणा करतां होय ॥५१॥

पंचसया पंचगुणा धणुहाणं जेसिं होइ गेहाणं । आयामवित्थरेसुं तेसिं गेहाण धणुगणिअं ॥ ५२ ॥

अर्थ—पांचसें धनुष्यने पांचगुणा कीजे तो पचीसो धनुष्य थाय. जे घर २५०० धनुष्य लांबपणे पहोलपणे होय. आखुं घर केटली भूमीका रोकी रहे छे. ते कहे छे. पचवीससोने पचवीससो गुणा कीजे जेटला थाय तेटली ॥ ५२ ॥ केटला थाय ते कहे छे.

बासट्ठी खलु लक्खा पन्नासं चेव तह सहस्साइं । एएण रासिणा पुरघणूण चउभागहीणाण ॥५३॥

अर्थ—बासठ लाख अने पचास हजार धनुष्य थाय एक एक घर एटली भूमिका चांपी रह्यां छे. जे घर २५०० धनुष्य लांबपणे पहोलपणे छे. जे घर ६२५०००० धनुष्य भूमिका चांपी रह्यां छे तेहवां एक नगरीमांहे केटलां घर छे ते कहे छे. 'एएण' एहज ६२५०००० धनुष्य पुरना धनुष्य ४३२०००००००० एह मांहेलो चोथो भाग काढीए ॥ ५३ ॥ शु रहे छे ते कहे छे.

इअ तिन्नि कोडिसहसा दो कोडिसया उ कोडिचालीसा। तेसिं पुव्वुत्तेणं भागंमी रासिणा गहिए ॥५४॥

अर्थ—त्रण सहस्र कोटी, बसो कोटी, चालीस कोटी धनुष्य होय. ३२४००००००० ए आंक उपर मांडी हेठे ६२५०००० आ आंक मांडीए पछे भाग दीजे ॥ ५४ ॥ भाग देतां जे लाभे ते कहीये छीए.

लद्धा पंचसहस्सा चउरासीअं सयं च तह एगं । इत्तिअ गिहाणि एअप्पमाणहीणाणि य वहूआणि॥५५॥

 अर्थ-पांच हजार एकसो अने चोरासी एटलां घर एक नगरीमां माय. जेहनुं प्रमाण ६२५०००० धनुष्यनुं होय. ए प्रमाणथी

हीणा प्रमाणनां घर घणां होय. ॥ ५५ ॥ हवे एकैक घरने विषे मनुष्य केटलां माय ते कहे छे.

पुव्वुत्तेणं मज्झिमभंगेणं माणुसाण जं माणं। तेण सयमेव गेहेसु होइ लोगो ठवेअव्वो ॥ ५६ ॥

अर्थ-पूर्वोक्त कह्युं मध्यम भागे जेम मनुष्यनुं मान तेणे करी स्वयमेव लोक घरने विषे स्थापवुं. एक एक मनुष्य १२५०० धनुष्यनुं छे अने एक एक घर ६२५०००० धनुष्य चांपी रह्यां छे. तो ६२५०००० ए आंक उपर मांडी अने १२५०० आ आंक हेठे मांडीए पछे पांचे भाग दीजे पांचसे उगरे तो ए एक घरने विषे ५०० मनुष्य माय. ॥ ५६ ॥

जा पुण चउत्थभागो नयरधणूणं गिहेसु नो खित्तो। सो गिहभित्तीअंगणरत्थानिवमग्गजोग्गत्ति ॥५७॥

अर्थ-पुनः वली पुरना धनुष्यनो चोथो भाग १८०००००००० आटलुं घरना धनुष्यमां हीन घाल्युं ते शुं ? ते कहे छे. ते चोथो भाग घरनी भींत आंगणु, शेरी, राजमार्ग, ने वास्ते जोइए एटला माटे न घाल्युं ॥ ५७ ॥

बत्तीससहस्सा नाडयाण अंतेउरस्स चउसट्ठी। रायवरभवणअंतो भरहेण समं चियवसंति ॥ ५८ ॥

अर्थ--बत्रीस हजार नाटक करनार पुरुषो चोसठ हजार अंतेउरी राजभवन मांही भरत चक्रीनी संघाते वसे छे ॥ ५८ ॥

एअं इमं च भणिअं पन्नत्तीए उ जंबुदीवस्स। चत्तारि त्ति सेणाओ नयरीमज्झे न पविसंति ॥५९॥

अर्थ--जंबूद्वीप पन्नतीने विषे, एअं० पुर्वोक्तं इमं वक्ष्यमाण कह्युं छे चारे प्रकारनी सेना नगरीमांही न पेसे ॥ ५९ ॥

चक्किभवणप्पमाणं ववहारे भासियं फुडं एअं। तह केसवाण राईण पागयाणं च लोगाणं ॥ ६० ॥

अर्थ-चक्री, वासुदेव, राजा, प्राकृतलोक-सामान्यलोक एहना भवननुं प्रमाण एहवुं कह्युं छे ॥ ६० ॥ ते कहे छे.

चक्कीणं अट्ठसयं चउसट्ठी होइ वासुदेवाणं। बत्तीस मंडलीए सोलस हत्था उ पागईए ॥ ६१ ॥

अर्थ–चक्रवर्तीनुं भवन १०८ हाथ होय, वासुदेवनुं भवन ६४ हाथनुं होय, मंडलीकराजानुं भवन ३२ हाथनुं होय, सामान्यलोकनां घर १६ हाथ होय ॥ ६१ ॥ कांइक अधिकुं कहीए छीए.

एगतलेसु गिहेसुं एअं बत्तीसतलगिहाईसु । मायंति तदणुसारेण जे पुणो ते अणेगगुणा ॥ ६२ ॥

अर्थ–एकतलु छे जेहनुं एहवा घरने विषे एअं० पूर्वोक्त मनुष्य पांचसे माय, बत्रीसतलां छे जेहनां एवा घरने विषे तेना अणुसारे बत्रीसतलाने विषे जुदा जुदा पांचसो पांचसो माय, जे पुनःवली ते एकतलाना घरथी बत्रीस तला अनेक गुणा कहेतां एहवा घर अनेक छे ॥ ६२ ॥ किंच–

एगेगाए पागरवीहिगाए अणेगबाराइं । जं हुंति तव्वसाओ पायारपुराइं णेगाइं ॥ ६३ ॥

अर्थ–एकेका प्राकारनी वीथिकाने विषे, मार्गने विषे, अनेक द्वार होय. जेह कारणथी तद्वसात् ते अनेक द्वारनां विशेष प्राकारने विषे पुरो अनेक होय. ॥ ६३ ॥

तत्तो तहाविहो कोइ नत्थि वज्झाण अंतरंगाणं । गेहाणित्थ विसेसो एवं किं माइ नो तत्थ ॥ ६४ ॥

अर्थ–ततः तस्मात् कारणात् तेह कारणथी नगरी बहार घर छे तेहनुं तथा नगरीमांहि घर छे तेहनुं, अत्र तथा विध कोइ विशेष नथी. जेहवां नगरी बहारनां घर छे तेहवां नगरी माहीलां घर. ग्रंथकार पुछे छे. कहीए एवं इण प्रकारे तत्थ-ते भरतक्षेत्रने विषे किं न माय ? अपितु माय ॥ ६४ ॥

जुअलुप्पन्नो तयणंतरो वि पाएण भरहखित्तम्मि । लोगो तो माइ बहू पुरेसु गामेसु नेअव्वो ॥६५॥

अर्थ–जुगलीयां उत्पन्न थयां तदनंतर तिवार पछी कहेतां हुंकडे जे काल प्रवाहे भरतक्षेत्रने विषे लोक पुरने विषे गामने विषे घणुं माय. एहवुं जाणवुं. तो पाछला कालना केम न माय ॥ ६५ ॥

[illegible] संमायंतंमि चक्किपरिवारे । कहमन्नहा सुअत्थो बुहेण तीरइ परूवेउं ॥ ६६ ॥

अर्थ–एवं इण प्रकारे तस्मिन् ते भरतक्षेत्रना लेसुद्देसेण कहेतां लवलेस मांहीं चक्रीनो परिवार माय अन्यथा सूत्रनो अर्थ प्ररूपवा केम शक्तिमान थइए ॥ ६६ ॥

जइ पुण सहस्सगुणिए चउसयगुणिए व कस्सई तोसो। नो सो तहा वि कुज्जा परं विरोहं परिहरिज्जा ॥६७॥

अर्थ–यदि कहेतां जो पुनः वली सहस्र (१०००) गुणित अने चारसो गुणित कहीने संतोष उपजे तो तथा विध ते संतोष करो परंतु सहस्र गुणित चारसो गुणीत एहनुं मानवुं पण एटलुं करवुं विरोध परिहरवो. ॥ ६७ ॥

अम्हाणमभिनिवेसो न कोइ इत्थ परमन्नहा सुत्तं। अघटंतं पि व पुव्वावरेण पडिहाइ किं करिमो ॥६८॥

अर्थ–अत्र अंगुल विचारने विषे ग्रंथकारक कहे छे अम्हने कांइ अभिनिवेस कहेतां कदाग्रह नथी परं अन्यथा पूर्वापर पहेलुं अने पछी सूत्र विघटे हुं सुं करूं ? ॥ ६८ ॥

एअम्मि अपन्नविए उस्सुत्तं हुज्ज किं पि जइ इत्थ। तो ॥मे मिच्छा दुक्कडमिह तत्तविऊ जिणो जेण ॥६९॥

अर्थ–ए अंगुल सत्तरी प्ररूपतां कांइपण उत्सूत्र. यदि कहेतां जो. अत्र कहेतां इहां, अगुल विचारने विषे मुजने ' मिच्छा-मिदुक्कडं ' जे कारणे तत्वनो जाण, जिन केवली ते जाणे ॥ ६९ ॥

सिरिमं मुणिचंदमुणीसरेहिं सुत्ताणमणुसरंतेहिं । सुत्तगयजुत्तिसारं रइअमिणं सपरगुणहेउं ॥ ७० ॥

अर्थ–सूत्रनी आज्ञाने अनुसरता एवा श्रीमान् मुनिचद्रमुनीश्वरे सूत्रगत जे युक्ति ते मार० प्रधान एहवी अंगुलसप्ततिकानी रचना करी । किमर्थं रचितं स्व अने परने अर्थे. ॥ ७० ॥

॥ इति अंगुलसप्ततिका समाप्ता ॥